

सीआइएमपी : कम पानी खर्च कर होगा बिजली का उत्पादन

● हाइड्रोलिपिटिंग की नयी टेक्नोलॉजी के मॉडल का उद्घाटन

संवाददाता > पटना



चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान में मंगलवार को रोहित कुमार और संस्थान के मेंटर द्वारा तैयार की गयी हाइड्रोलिपिटिंग की नयी टेक्नोलॉजी के मॉडल का उद्घाटन किया गया. इस तकनीक के जरिये कम पानी खर्च कर अधिक बिजली का उत्पादन करना आसान होगा. रोहित कुमार ने बताया कि इस मॉडल के जरिये संगृहीत पानी का उपयोग कर बिजली का उत्पादन हो सकता है. इस तकनीक से कम खर्च में बिजली उत्पादन किया जा सकता है. उन्होंने बताया कि इस मॉडल

का इस्तेमाल कर विभिन्न संस्थानों, अस्पतालों और ग्रामीण इलाके में बिजली का उत्पादन किया जा सकता है. इस अवसर पर चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान की ओर से आयोजित व्याख्यान शृंखला कार्यक्रम में पूर्व राज्यसभा सदस्य आरके सिन्हा ने कहा कि यदि आप एक उद्यमी बनना चाहते हैं, तो आपको यह सोचना होगा कि आप समाज या देश के लिए कुछ बेहतर कैसे कर सकते हैं.

हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर सिस्टम के स्टार्ट अप में आई रूकावट

patna@inext.co.in

PATNA (2 Aug): जहां चाह, वहां रह वाली बात को सच साबित किया है रोहित कुमार ने. इन्होंने एक स्टार्ट अप का प्रोजेक्ट बनाया है जिसे नाम दिया गया है हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर सिस्टम. इसका प्रोविजनल पेटेंट हो चुका है और आईआईटी पटना के द्वारा इसे वेरिफाई भी कर लिया गया है. इस प्रोजेक्ट का शुभारंभ पूर्व राज्य सभा सांसद आर के सिन्हा ने किया. इस मौके पर आईआईटी पटना के डीन एके ठाकुर, प्रोजेक्ट के मेंटर प्रो. राजीव वर्मा, हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ अनिल सुलभ और सीआईएमपी के फैकल्टी उपस्थित रहे. आर के सिन्हा ने इस

प्रोजेक्ट के इनोवेटर रोहित को ऐसे मिली प्रेरणा

प्रोजेक्ट के इनोवेटर रोहित ने बताया कि वह जमुई जिले के एक गांव के रहने वाले है. अक्सर यहां पानी की किल्लत होती थी. इससे किसानों को और गांव में पानी की अन्य जरूरतों के लिए इसकी कमी झेलनी होती थी. मैं जब क्लास चार में पढ़ रहा था तब से ही मेरे मन में यह बात थी कि पानी की कमी को दूर करने के लिए कोई प्रोजेक्ट तैयार करना है. आज यह प्रोजेक्ट तैयार है और खुशी महसूस हो रही है.

रोहित के मेंटर ने बताया कि यह प्रोजेक्ट क्यों?

इस प्रोजेक्ट के इनोवेटर रोहित कुमार को मेंटर करने वाले डॉ राजीव वर्मा ने बताया कि चाहे थर्मल पावर जेनरेशन हो या विंड पावर जेनरेशन- दोनों ही मामले में कंटीन्यूटी की शर्तें हैं, जो पूरी नहीं हो पाती है. जैसे हाइल पावर के लिए पानी हमेशा पर्याप्त मात्रा में हो, प्रेशर भी होना चाहिए. जब पानी कम होगा तो पावर जेनरेशन का काम रूक सकता है. वहीं, विंड एनर्जी के लिए विंड का तेज होना जरूरी है. लेकिन यह प्रोजेक्ट लगातार चल सकता है. आम तौर जो डैम होता है वह अपर से लोअर रिजर्वायर में जाकर वेस्ट हो जाता है. लेकिन इस प्रोजेक्ट में यह वेस्ट नहीं होता है.

इनोवेटर रोहित के प्रोजेक्ट की खास बातें

यह प्रोजेक्ट बहुत ही एनर्जी इफिशियंट टेक्नोलाजी है. जो कि वाटर रिसाइकल करने के लिए और बिजली उत्पादन करने के लिए पावर प्लांट की तुलना में 90 प्रतिशत कम ऊर्जा खर्च होती है. इसका सिद्धांत में अपर और लोअर रिजर्वायर और जैक है. इसमें सबसे पहले अपर रिजर्वायर से पानी को लोअर रिजर्वायर में जाने देता है और एक जैक के सहारे इतना उपर उठाता है. जो कि अपर रिजर्वायर से उपर होता है. इस वजह से जहां पानी की कमी के कारण पारंपरिक तौर पर पावर जेनरेशन रूक जाता है, इस सिस्टम में यह लगातार पावर जेनरेशन में मदद करेगा. इसका इंडस्ट्रियल और डोमेस्टिक यूज किया जा सकता है.